ग्रामीण विकास विभाग
बिहार सरकार

अन्दर के पृष्ठों में...

सतत् जीविकोपार्जन योजना ने संवारी ज़िन्दगी
(पृष्ठ – 02)

एसजेवाई की मदद से बदल गयी शहनाज की जिन्दगी
(पृष्ठ – 03)

सतत् जीविकोपार्जन योजना, जिला एवं राज्य स्तरीय गतिविधियां
(पृष्ठ – 04)

सतत् जीविकोपार्जन योजना

एक नई राह

माह – मार्च 2023 ।। अंक – 20

सतत् जीविकोपार्जन योजना अंतर्गत उद्यमिता नवाचार

स्वरोजगार के नये अवसरों और प्रयोगों ने ग्रामीण महिलाओं के स्वावलंबन की राह आसान की है। साथ ही गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम को भी नई दिशा एवं गति प्रदान कर रही है। दरअसल बिहार राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में जीविका द्वारा संचालित सतत् जीविकोपार्जन योजना से गाँव के अत्यंत गरीब परिवारों को जोड़कर उन्हें स्वरोजगार का अवसर उपलब्ध कराया जा रहा है। कल तक देशी शराब एवं ताड़ी के उत्पादन एवं बिक्री से पारंपरिक रूप से जुड़े अत्यंत निर्धन परिवार तथा अनुसूचित जाति एवं जनजाति तथा अन्य समुदायों के लक्षित परिवारों को अब सतत् जीविकोपार्जन योजना से जोड़कर आर्थिक एवं सामाजिक तौर पर सशक्त बनाया जा रहा है।

योजना के शुरुआती दौर में तो ग्राम संगठन से अनुमोदन के पश्चात चयनित परिवार की मुखिया एवं जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी महिला को उनके रूचि के अनुरूप व्यवसाय हेतु उत्पाद एवं संसाधन उपलब्ध कराते हुए स्वावलंबन की राह दिखाई है। सतत् जीविकोपार्जन योजना से जुड़ने के बाद लाभुक किराना दुकान, फल–सब्जी दुकान, बकरी पालन, गाय–भैंस पालन एवं बतख पालन जैसे व्यवसाय करते हुए खुद को आर्थिक एवं सामाजिक तौर पर सशक्त करते रहे हैं। लेकिन अब बदलते हुए परिवेश में स्वरोजगार के नवाचार अवसर एवं प्रयोगों ने मुनाफा बढ़ाया है।

अब सतत् जीविकोपार्जन योजना से जुड़ने वाले परिवार आय और मुनाफा को बढ़ाने वाले व्यवसाय को अपना रहे हैं। अब वो लोग किराना दुकान और मवेशी पालन के बजाय श्रृंगार स्टोर, सिलाई केंद्र और ब्यूटी पार्लर जैसे व्यवसाय को अपना रहे हैं। ये व्यवसाय रोजगारोन्मुख भी साबित हो रहे रहे हैं। लाभार्थी अपने हुनर के अनुरूप या फिर प्रशिक्षण प्राप्त कर आधुनिक व्यवसाय को अपना भी रहे हैं और अपने यहाँ गाँव की महिलाओं एवं लड़कियों को प्रशिक्षण देकर हुनर देते हुए स्वावलंबन की राह दिखा रहे हैं। इस तरह के व्यवसाय से दोहरा फायदा हो रहा है। एक तो वो खुद आर्थिक एवं सामाजिक रूप से सशक्त हो रही हैं, वहीं प्रशिक्षण प्राप्त करनेवाली महिलाएं एवं युवतियां व्यावसायिक कोर्स करने के बाद खुद का सिलाई केंद्र या फिर ब्यूटी पार्लर खोलकर ज्यादा मुनाफा कमा रही हैं।

परंपरागत व्यवसाय की अपेक्षा रोजगारोन्मुख व्यवसाय से समाज में मान–सम्मान, बेहतर अवसर एवं माहौल भी मिल रहा है। नवाचार उद्यमिता विकास आमदनी पैदा करने के अवसरों का सृजन, क्षमता निर्माण और अंतत: उद्यमिता को स्थायी विकास के शुरुआत के तौर पर भी देखा जा रहा है। साथ ही उद्यमिता के तहत नव परिवर्तन ग्रामीण महिलाओं की रचनात्मकता, उनके बेहतर एवं व्यवसायिक सोच की प्रक्रिया के साथ ही व्यवसाय के एक ब्रांड को भी प्रदर्शित करता है। मसलन अगर कोई महिला सिलाई केंद्र से कोई कपड़ा सिलवाती है तो उस कपड़े पर सिलाई केंद्र का नाम महिला व्यवसायी और उनके नाम की ब्रांडिंग और प्रचार–प्रसार भी करता है। लिहाजा सतत् जीविकोपार्जन योजना अंतर्गत उद्यमिता के नवाचार के नए आयाम उत्पादों को सुरक्षा देते हुए काम, दाम और नाम को प्रदर्शित कर रहे हैं। इसमें उत्पादों के नुकसान होने वाली बात भी नहीं है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना ने संवारी ज़िन्दगी

खगड़िया जिला के अलौली प्रखंड की ममता दीदी अत्यंत निर्धन परिवार से हैं। उनके पति ताड़ी एवं शराब का सेवन करते थे जिस कारण उन्हें अपने जिम्मेवारी का अहसास नहीं था। उनके पति को मन होता था तो काम करते थे नहीं तो खाली हाथ बैठे रहते थे। ममता दीदी दिव्यांग होने के कारण काम नहीं कर पाती थीं। उनके 7 बच्चे हैं। उनकी आर्थिक स्थिति इतनी ख़राब थी कि कई दिन भर पेट भोजन भी नहीं नसीब होता था। वर्ष 2020 में उनका चयन सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत किया गया। इस योजना के अंतर्गत 20,000 रुपये प्राप्ति के उपरांत ग्राम संगठन द्वारा उन्होंने कपडा धोने वाले सामग्री एवं आयरन ख़रीदकर लॉन्ड्री का काम शुरु किया। दीदी को इससे अच्छी आमदनी होने लगी। आमदनी में ईजाफा को देखते हुए दीदी को ग्राम संगठन द्वारा एक वाशिंग मशीन खरीद कर दिया गया। इसके बाद दीदी को कम मेहनत में ज्यादा आमदनी होने लगी। दीदी ने मेहनत कर आमदनी बढ़ाने के बारे में सोचने लगी। दीदी ने कपड़े की सिलाई सीखना शुरू कर दिया। लॉन्ड्री के काम से बचाये पैसे से एक सिलाई मशीन खरीदी। इसके बाद वह सिलाई और रफ्फू का काम भी करने लगी। आमदनी में से बचत कर दीदी ने गांव में एक दुकान भाड़े पर लिया। दीदी ने इसी आमदनी से अपने दो बेटियों की शादी करवाई तथा अभी 5 बच्चों को शिक्षा दिला रही हैं। दीदी को अभी महीने में 15000–18000 रुपये की आमदनी हो जाती है। अभी दीदी की कुल संपत्ति लगभग डेढ़ लाख रुपये है। आज दीदी सम्मान के साथ जीवन यापन कर रही है। दीदी इन सब के अलावा विभिन्न सरकारी योजनाओं का भी लाभ ले रही हैं। अपने जीवन में आये इस परिवर्तन के लिए दीदी सतत् जीविकोपार्जन योजना तथा जीविका को दिल से धन्यवाद देती हैं।

सतत् जीविकोपार्जन योजना से बदला माया का जीवन

माया कुँवर भोजपुर जिला के चरपोखरी प्रखंड की रहने वाली है। दीदी के पास ना कोई संपत्ति थी और ना ही अपनी जमीन। उनके पति मजदूरी कर किसी तरह परिवार का भरण – पोषण करते थे। दीदी घर का कार्य देखती थी। परंतु इनके पति नगेंद्र पासवान को शराब पीने का बुरी लत लगी हुई थी। शराब पीने की वजह से उनकी तबियत ख़राब हो गयी। बेहतर इलाज के लिए लिए दीदी को कर्ज भी लेना पड़ा। परंतु तबियत अत्यधिक ख़राब होने की वजह से इनके पति की मृत्यु हो गई। पति की मृत्यु के बाद दीदी के ऊपर संकट का पहाड़ टूट पड़ा। कहाँ से कमाई हो? किस तरह से परिवार का भरण–पोषण हो? ये बातें दीदी को सताने लगी। ऊपर से महाजन भी कर्ज वापसी को लेकर दबाव डालने लगा। महाजन के दबाव में उन्होंने अपना गहना बेच कर कर्ज चुका दिया। उनकी खराब आर्थिक स्थिति को देखते हुए संभावना जीविका महिला ग्राम संगठन के द्वारा सतत् जीविकोपार्जन योजना के लाभार्थी के रुप में चुनाव किया गया।

सतत् जीविकोपार्जन योजना अंतर्गत किराना व श्रृंगार की दुकान खोलने के लिए एस.आई.एफ़ की राशि 10,000 रुपये, एल.आई.एफ़ की राशि 20,000 रुपये के अलावा एल.जी.ए. एफ़. की राशि 1,000 रुपये उन्हें प्रारंभ में सात माह तक प्रदान किया गया। दुकान से आमदनी बढ़ी तो उन्होंने 10 कट्ठा जमीन बटाई पर लेकर खेती करना शुरू किया। अभी दुकान से प्रति माह औसतन 7,000 रुपये आमदनी होती है। वर्त्तमान में दीदी का उत्पादक संपत्ति का मूल्य 40,000 रुपये है।

इसके अलावा दीदी के परिवार को राशन की सुविधा भी मिल रही है। बैंक से जुड़ाव हो गया है। बच्चे पढ़ने के लिए विद्यालय जाते हैं। इसके साथ ही दीदी बीमित भी हो गयी है। बच्चे पढ़ने के लिए विद्यालय जाते हैं।

एसजेवाई की मदद से बदल गयी शहनाज की जिन्दगी

समस्तीपुर जिला के वारिसनगर प्रखंड अंतर्गत सतमलपुर पंचायत के सतमलपुर गॉव की शहनाज खातुन सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत किराना दुकान का संचालन एवं बकरी पालन का कार्य कर रही है। इसके पहले शहनाज खातुन काफी कठिनाईयों का सामना कर रही थीं। शहनाज के पति ने दूसरी शादी कर लिया, जिस कारण दीदी बिलकुल बेसहारा हो गई। बच्चों का लालन–पालन कठिन हो गया था। शहनाज खातुन बताती हैं कि–'परिवार के लालन–पालन के लिए दूसरों के खेतों में मजदूरी करती थीं, फिर भी घर की जरूरतें पूरी नहीं हो पाती थी। कई दिन ठीक से खाना भी नसीब नहीं होता था।'

शहनाज आगे कहती हैं कि–'इन्हीं कठिनाईयों के बीच मेरी जिंदगी चल रही थीं कि सतत् जीविकोपार्जन योजना से मुझे जुड़ने का मौका मिला। योजना से जुड़ने के बाद योजना से मिली आर्थिक मदद से बकरी पालन का कार्य शुरू किया। थोड़ी स्थिति अच्छी हुई तो किराना की दुकान खोल लिया। पहले मजदूरी से महीने में 1,000 रुपये कमाई भी मुश्किल से हो पाती थी परंतु अब किराना दुकान चलाने एवं बकरी पालन से महीने में 8 से 9 हजार रुपये की कमाई कर रही हूँ। मुझे कई सरकारी योजनाओं का लाभ भी मिल गया है। मेरे बच्चे पढ़ने के लिए अब स्कूल जाते हैं और पौष्टिक भोजन कर रहे हैं। अपनी मासिक आमदनी में से बचत कर अपने बेटी की शादी अच्छे परिवार में की हूँ।'

दीदी अब काफी खुश हैं। वह कहती हैं कि–'पहले मेरी खराब स्थिति के कारण कोई मेरी मदद नहीं करता था। अब मैं इस हालत में पहुंच गई हूँ कि दूसरों को मदद पहुंचा रही हूँ।'

एसजेवाई से सुदामा के जीवन को मिला सहारा

गाँव की सबसे गरीब परिवारों में शामिल सुदामा देवी के लिए सतत् जीविकोपार्जन योजना किसी वरदान से कम नहीं है। इस योजना से लाभान्वित होकर चूड़ी और श्रृंगार दुकान चलाकर सुदामा देवी ने आर्थिक एवं सामजिक उन्नति की है। लखीसराय जिला अंतर्गत हलसी प्रखंड स्थित शिवसोना गाँव की रहनेवाली सुदामा के पति बिंद मांझी छत से गिर गए थे। गिरने की वजह से उनके पति गंभीर रूप से चोटिल हो गए थे। अस्पताल में इलाज के दौरान उनकी मृत्यु हो गई। अपने पति के इलाज के लिए सुदामा देवी को कर्ज लेना पड़ा था। कर्ज के बोझ तले 3 बेटी और 2 बेटा का पालन पोषण करना उनके लिए मुश्किल हो गया था। खेत या किसी के घर में मजदूरी करते हुए मुश्किल से पेट भर पाता था। दुर्गा जीविका महिला स्वयं सहायता समूह की सदस्य सुदामा के हालात को देखते हुए उन्हें सतत् जीविकोपार्जन योजना अंतर्गत चूड़ी और श्रृंगार दुकान के लिए इनके नाम का अनुमोदन महिमा जीविका महिला ग्राम संगठन ने किया। वर्ष 2022 के सितम्बर माह में ग्राम संगठन द्वारा 20 हजार रुपये का सामान दिया गया और विशेष निवेश निधि के तहत दस हजार रुपये की राशि से सुदामा ने अपनी झोंपड़ी में ही चूड़ी की दुकान खोल ली। सुबह और शाम चूड़ी दुकान चलाती हैं एवं दिन भर अपने गाँव के अलावा आस–पास के गाँव में फेरी लगाकर चूड़ी बेचती हैं। दिन में दुकान उनकी सास संभालती है। प्रतिदिन डेढ़ से दो हजार रुपये की बिक्री हो जाती है। इस बिक्री से इन्हें रोज दो से तीन सौ रुपये का मुनाफा हो जाता है। सतत् जीविकोपार्जन योजना अंतर्गत रोजगार के साधन मिलने से आर्थिक तंगी दूर हुई है। सुदामा दीदी अब अपने बच्चों और सास का पालन–पोषण ठीक से कर रही है। सुदामा देवी बताती हैं कि जीविका समूह के कारण इनके घर को सहारा मिला। इन्हें कई सरकारी योजनाओं का लाभ मिल रहा है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना
जिला एवं राज्य स्तरीय गतिविधियां

बकरी हाट का आयोजन

चंदा एसजेवाई बकरी उत्पादक समूह के नेतृत्व में सतत् जीविकोपार्जन योजना के तत्वावधान में गया जिला के मानपुर में बकरी हाट कार्यक्रम का आयोजन किया गया। आयोजन में कुल 151 एसजेवाई से जुड़ी लाभार्थियों ने भाग लिया। बकरी हाट में कुल 285 बकरियां बिक्री के लिए लाई गईं। इस बकरी हाट का प्राथमिक उद्देश्य एसजेवाई सदस्यों के लिए एक बाजार उपलब्ध कराना था, जो बकरी पालन में लगे हुए हैं। इस आयोजन से एसजेवाई से जुड़ी लाभार्थियों को बकरियों को बेचने और आय अर्जित करने में आसानी हुई। इस गतिविधि से जीविकोपार्जन गतिविधियों में दीदियां समर्थ हुई हैं।

जे–पाल के दक्षिण एशिया टीम ने किया क्लस्टर भ्रमण

ग्रामीण परिवारों के लिए स्थायी रोजगार को बढ़ावा देने के लिए सतत् जीविकोपार्जन योजना शुरू की गई है। इस पहल के हिस्से के रूप में जे–पाल के दक्षिण एशिया टीम ने क्लस्टर पहल की प्रक्रिया का दस्तावेजीकरण करने के लिए बिहार के रोहतास जिले का दौरा किया। इस दौरान टीम ने झाड़ू और चूड़ी बनाने में शामिल कई परिवारों से बातचीत की। उन्होंने इन परिवारों के सामने आने वाली चुनौतियों और उनकी रोजगार पर क्लस्टर पहल के प्रभाव को समझने की कोशिश की। टीम ने झाड़ू और चूड़ी बनाने में शामिल प्रक्रियाओं और क्लस्टर पहल द्वारा प्रदान की गई सहायता का भी दस्तावेजीकरण किया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

सतत् जीविकोपार्जन योजना बिहार सरकार द्वारा अत्यंत गरीब परिवारों के लिए स्थायी जीविकोपार्जन को बढ़ावा देने के लिए शुरू की गई है। इस पहल के तहत, दीदियों को उनके रोजगार को बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण और सहायता प्रदान करने के लिए ग्रेजुएशन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। इसी क्रम में खगड़िया जिला के अलौली एवं चौथम प्रखंड में ग्रेजुएशन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें 210 दीदियों ने भाग लिया।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी – कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री अजीत रंजन – राज्य परियोजना प्रबंधक (अनुश्रवण एवं मूल्यांकन)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)
- श्री रतिस मोहन परियोजना प्रबंधक (सामाजिक सुरक्षा)

संकलन टीम
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, बेगूसराय
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, सिवान
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार